खट्टर ने निकाला अपने गठ्ठर का जुलूस

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते साढे तीन साल से हरियाणा का मुख्यमंत्री पद कब्जाये बैठे मनोहर लाल खट्टर को जाने क्या सूझी कि 28 अप्रैल को फ़रीदाबाद आकर खुद अपना ही जुलूस निकाल डाला। इसे नाम दिया गया रोड शो। आम तौर पर इस तरह की नौटंकी चुनावों के समय देखी जाती है। इसके द्वारा फ़सली नेता जनता को बहकाने का प्रयास करते हैं कि वे बहुत बढिया नेता हैं। उन्होंने अपने शासनकाल में जनता के सब दुख-दर्द हर लिये थे और यदि कोई रह गये हैं तो वे दोबारा सत्तारूढ होने पर हर लेंगे।

खट्टर का फ्लॉप रोड शो : गाड़ी पर तिरंगा उल्टा, दिमाग में सब उल्टा!

बड़खल विधानसभा क्षेत्र में अपना जुलूस निकाल कर खट्टर जी आखिर क्या बताना चाहते हैं इस शहर की जनता को? उनके बिना बताये सारी जनता जानती है कि भ्रष्टाचार का पर्याय बना नगर निगम भारी भरकम टैक्स वसूली के बावजूद न तो पीने का पानी मुहैया करा पा रहा है और न ही सड़ती नालियों व उफ़नते सीवरों से निजात दिला पा रहा है।

उनके सरकारी बीके अस्पताल में न तो पर्याप्त डॉक्टर व स्टाफ़ हैं और न ही दवायें व उपकरण। प्रसूति वार्ड का हाल-बेहाल आये दिन अखबारों की सुर्खी बनता है। हड्डियों का एक ही डॉक्टर है जबकि मरीज 100 से अधिक आते हैं। ऐसे में डॉक्टर साहब सौदेबाज़ी के आधार पर अपनी क्षमतानुसार 5-10 मरीजों को चुन लेते हैं, बाकी जाओ कहीं भी। इसी तरह सर्जरी व अन्य विभागों का हाल भी बेहाल है।

आवारा पशुओं व कुत्तों से त्रस्त शहरवासी जो चीख पुकार कर रहे हैं वह खट्टर जी के बंद कानों को खोल पाने में असमर्थ है। लोग़ों को काटने के लिये कुत्ते तो खुले छोड़ रखे हैं परन्तु रैबीज़ के टीके खट्टर जी यहां कभी भेजते नहीं।

सरकारी स्कूलों में जो दुर्दशा कांग्रेस शासन में थी खट्टर के साढ़े तीन साल के शासनकाल में रत्ती भर सुधरने की अपेक्षा बिगड़ी ही है। इनकी पहले से जर्जर इमारतें और भी जर्जर हो चुकी हैं। बच्चों के बैठने के लिये न तो पर्याप्त कमरे व फ़र्नीचर हैं और न ही पढाने के लिये पर्याप्त स्टाफ़। किसी भी महकमे का कोई भी दफ़्तर भ्रष्टाचार से अछूता नहीं है। खट्टर चाहे भ्रष्टाचार मुक्त हरियाणा का कितना ही राग अलापें लेकिन हर दफ़्तर में खुला भ्रष्टाचार चल रहा है।

जिन सड़कों से खट्टर को गुजरना है, उनके गड्ढे पिछले दो-तीन से भरकर आखिर किसको धोखा दिया जा रहा है? यहां तक कि सफाई कर्मचारियों को अपनी झाड़ू मांगने के लिए हड़ताल की धमकी देनी पड़ी है।

इस सबके बावजूद आखिर खट्टर यहां अपना जुलूस निकलवाने आये क्यों हैं? सवाल बड़ा महत्वपूर्ण है। दरअसल, रोहतक ज़िले के इस मूल निवासी की अपने ज़िले में कभी भी कोई राजनीतिक हैसियत नहीं रही। ऐसा भी नहीं है कि वहां पंजाबी विरोध कुछ ज़्यादा है। वहां से, पंजाबी होते हुये जनसंघ के टिकट पर कई बार मंगल सेन और कांग्रेस के टिकट पर कई बार बतरा बंधु विधायक बनते रहे हैं। आज भी वहां से एक पंजाबी, ग्रोवर विधायक हैं। इस सबके बावजूद खट्टर की स्थिति वहां शून्य के समान है।

मोदी लहर के बहकावे में करनाल के लोग़ों ने खट्टर नामक इस व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि चुना था बेशक था लेकिन वेरह-रह कर पछता रहे हैं। मौका मिलते ही वे अपनी गलती को सुधारने की ताक में हैं। खट्टर खुद भी इस हकीकत से खूब अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। इसी डर से वे अपने लिये सुरक्षित चुनाव क्षेत्र ढूंढने में गत एक-डेढ वर्ष से लगे थे। इस बाबत '**मज़दूर मोर्चा**' ने पहले भी विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की थी।

लगता है अब उन्होंने अन्तिम फ़ैसला लेते हुए फ़रीदाबाद (बड़खल) सीट को अपने लिये सबसे सुरक्षित समझ लिया है। उन्हें ऐसा समझाने में उन चाटुकारों की अहम भूमिका रही है जिनका चुग्गा-पानी सत्ता की दलाली से चलता है। जिन पंजाबी वोटों के सहारे खट्टर यहां दांव खेलने जा रहे हैं वे इतने बावले भी नहीं हैं। उन्होंने बीते साढ़े तीन साल में खट्टर को खूब देख परख लिया है। यह बहुत सयानी व कामयाब कौम है। इनके बीच में इनके अपने एक से बढ़ कर एक बढिया नेता मौजूद हैं जिनके पीढ़ियों पुराने सम्बन्ध हैं।

इन हालात में खट्टर के हाथ यहां कुछ लगने वाला नहीं और चुनाव में चारों खाने चित्त पड़ेंगे। जमानत भी बचा पायेंगे तो बड़ी बात होगी। यानद्ध खट्टर को अपना गठ्ठर फरीदाबाद में उतारना भारी पड़ेगा।

खुद भाजपाई पार्षदों ने खोली 'विकास' की पोल

सुभाष बराला : जैसा निकला बेटा 'विकास' वैसा ही चला प्रदेश का विकास

फ़रीदाबाद (म.मो.) केन्द्र में मोदी सरकार के 4 साल व हरियाणा में खट्टर सरकार के साढे तीन साल में हुए 'विकास' का जायजा लेने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सुभाष बराला गत शनिवार यहां पहुंचे थे। संदर्भवश, ये वही बराला साहब हैं जिनका वकालत पास सपुत्र चंडीगढ में एक लड़की का पीछा करने के आरोप में गिरफ़्तार होकर जेल गया था। उस 'विकास' को बचाने के लिये बराला व खट्टर सरकार ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी।

सेक्टर 15 ए स्थित जिमखाना क्लब में बराला ने ग्रामीण विकास की स्थिति जानने के लिये ज़िला परिषद के (भाजपाई) पार्षदों की एक बैठक बुलाई। इस बैठक में तमाम पार्षदों ने एक स्वर में कहा कि खट्टर सरकार के साढे तीन साल में कतई कोई विकास कार्य उनके ग्रामीण क्षेत्रों में तो हुआ नहीं। सरकार जो बजट जारी करती है वह कहां जाता है कोई पता नहीं। अफ़सर उनकी बात सुनने को तैयार नहीं। पार्षदों ने साफ़ शब्दों में पूछा कि साल-डेढ साल बाद जब वे पार्टी के लिये वोट मांगने जायेंगे तो वोटरों को क्या जवाब देंगे?

फ़तेहाबाद के टोहाना से विधायक चुने गये बराला ने कहा कि उन्होंने पार्षदों की सारी बातें नोट कर ली हैं; चंडीगढ जाकर वे इन मुद्दों पर मुख्यमंत्री खट्टर से बात करेंगे। बड़ा अजीब मामला है, बराला को इतनी सी बात का पता नहीं कि यहां विकास का कोई काम नहीं हुआ है जबकि ऐसा कोई महीना नहीं होगा जब बराला फ़रीदाबाद का दौरा न करते हों। वैसे भी इस तरह की जानकारियां प्राप्त करने हेतु किसी दौरे की जरूरत नहीं होती। और जिस मुख्यमंत्री खट्टर को वे यह सब बतायेंगे वे तो खुद हर महीने में चार बार इस शहर का दौरा करते हैं।

दरअसल विकास को लेकर पार्षदों को बड़ी भारी गलतफ़हमी है। आरएसएस द्वारा संचालित भाजपा उस तरह का विकास करने में विश्वास ही नहीं करती जिस तरह का विकास आम आदमी चाहता है, जो उसकी जरूरत है। भाजपा का विकास है राम मंदिर, गौ रक्षक दल खड़े करना, गौशाला के चंदे खाना, हिन्दू-मुस्लिम दंगे कराना, तिरंगा यात्रायें निकालना आदि-आदि। विकास के नाम पर कोई सड़क, पुल मैट्रो रेल आदि जो पिछली सरकार बना गयी हो उनका उद्घाटन कर नारियल फ़ोड़ना।

हां, सत्तारूढ विधायकों व मन्त्रियों का व्यक्तिगत विकास पूरे ज़ोरों पर है। कृष्णपाल गूजर ने तो अपने मामा श्री के माध्यम से कई आगामी पीढियों तक का विकास कर लिया है। बेटे को नगर निगम का वरिष्ठ उपमहापौर बनवा कर अपनी राजनीतिक विरासत का वारिस तैयार कर लिया है।

रही बात स्कूलों व अस्पतालों की तो वे बिना मास्टर व डॉक्टर के यूं ही चलते रहेंगे। जनता अनपढ़ रहे और इलाज के अभाव में मरती रहे उनकी बला से।

प्रशासनिक ऑपरेटरों की हड़ताल से जनता त्रस्त और सरकार मस्त रही!

फ़रीदाबाद (म.मो.) हरियाणा सरकार ने ज़िला प्रशासन का दफ़्तरी काम चलाने के लिये नियमित स्टाफ़ भर्ती करने की बजाय ठेकेदारी में करीब 110 कम्प्यूटर ऑपरेटर औनी-पौनी तनख्वाह पर लगा रखे हैं। दिनांक 17 अप्रैल से ये तमाम ऑपरेटर, हरियाणा भर के ऑपरेटरों के साथ मिल कर सामूहिक हड़ताल पर चले गये। पूरे 6 दिन की हड़ताल के बाद प्रशासनिक धमकी से डर कर ये 110 तो काम पर लौट आये जबकि पलवल समेत अन्य ज़िलों के ऑपरेटर अभी तक हड़ताल पर चल रहे है। इनकी मांग है कि उन्हें स्थाई सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाय। आखिर कब तक उन्हें इस तरह, अनिश्चित भविष्य के साथ ठेकेदारी में रगड़ा जाता रहेगा?

कुछ ऑपरेटर 10 और 15 वर्ष से इसी तरह काम पर लगे हुए हैं। वेतन के नाम पर उन्हें 15 से 25 हज़ार तक मासिक दिया जाता है। न कोई छुट्टियां हैं, न भविष्य निधि खाता है, न अन्य कोई सरकारी सुविधा। इसी अन्याय के विरुद्ध उन्होंने अपने संघर्ष का बिगुल बजाया था।

विदित है कि यही लोग तहसील में रजिस्ट्रियां, एसडीएम कार्यालय में ड्राइविंग लाइसेंस व छोटे वाहनों का पंजीकरण व आरटीए कार्यालय में तमाम बड़े वाहनों का पंजीकरण, परमिट बनाने आदि के काम करते हैं। इन कामों से सरकार को रोज़ाना करीब 5 करोड़ राजस्व के रूप में प्राप्त होते हैं, जो 6 दिन तक नहीं हुए। खैर सरकार को तो इससे कोई नुक्सान नहीं, जो राजस्व 6 दिन तक नहीं मिला वह सारा सातवें और आठवें दिन तक मिल जायेगा ब्याज समेत। जी हां ब्याज व जुर्माने सहित भी।

जिन लोग़ों के ड्राइविंग लाइसेंस इस अवधि में खारिज हो गये उनसे सरकार जुर्माना वसूल रही है, जिनके लर्निंग लाइसेंस खारिज हो गये और इस दौरान पक्के ड्राइविंग लाइसेंस नहीं बन पाये उन्हें दोबारा से लर्निंग लाइसेंस बनवाने को कहा जा रहा है। यानी सरकार की तो बल्ले-बल्ले हो गयी। रही बात ऑपरेटरों की तो उनका 6 दिन का वेतन तो सरकार ने बचा लिया और पिछला बकाया सारा काम उन्हीं से मुफ़्त में कराया जा रहा है। यह हो गयी दूसरी बल्ले-बल्ले। यानी झगड़ा सरकार व ऑपरेटरों का, भुगत रही है आम जरूरतमंद जनता।

दूसरी सोचने वाली बात यह है कि राज्य भर के ऑपरेटर तो हड़ताल पर हैं और पंचकुला पहुंच कर सरकार के दरवाजे खटखटा रहे हैं जबकि फ़रीदाबाद वाले अपने साथियों से गद्दारी करके अपने काम पर लौट आये। इस बाबत, इन ऑपरेटरों से काम कराने वाली आम जनता के अलावा कुछ ईमानदार ऑपरेटरों ने बताया कि यहां पर कुछ सीटें (काऊंटर) तो ऐसी हैं जहां बिना वेतन के भी लोग काम करने को तैयार हैं। इसका मतलब स्पष्ट है, भ्रष्टाचार! इन्हीं सूत्रों के अनुसार ये लोग 50 से 100 रुपये तक प्रति फ़ाइल दलालों के माध्यम से वसूलते हैं। इसके द्वारा शाम तक 500 से 1500 तक की दिहाड़ी बना कर आराम से घर जाते हैं।

ऐसा नहीं है कि यहां बैठे उच्च ज़िला अधिकारियों को इस बात का पता नहीं, वे खूब अच्छी तरह से सब कुछ जानते हैं। लेकिन चुप रहते हैं तो केवल इसलिये ताकि सरकारी सुविधायें न मिलने के बावजूद इनका ठेकेदारी की इस नौकरी के प्रति आकर्षण बना रहे, गरीब जनता लुटती है तो लुटती रहे। खट्टर और मोदी का भ्रष्टाचार मुक्त समाज का नारा तो गूंज ही रहा है।

ये जो लोग बैठे हैं सिक्योरिटी गार्ड ने इनके कंधे क्यों पकड़ रखे हैं योगी जी? कहीं कोई थप्पड़ या जूता निकाल कर ना मार दे! मतलब इनको पता है कि इनके कर्म इतने खराब हैं कि थप्पड़ या जूता पड़ सकता है। कुशीनगर में रेल क्रांसिंग पर तेरह स्कूली बच्चों की मौत पर उत्तेजित भीड़ ने योगी को खदेड़ भगाया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06